ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र,
अम्बिकापुर, जिला– सरगुजा (छ०ग०)
इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय

संख्या–१०

दिनांक–०५ सितम्बर २०१७

इमेल: aas_ambikapur@yahoo.co.in

टेलीफोन एवं फ़ेक्स– ०७७७४–२३२९८६

विगत सप्ताह का मौसम (३० अगस्त-०५ सितम्बर २०१७)

अजिरमा, अंबिकापुर स्थित कृषि मौसम वेधशाला में दर्ज आंकड़ो के अनुसार विगत सात दिनो के दौरान आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रहे एवं हल्की वर्षा हुई तथा सूर्य की तीव्र रोशनी की अवधि १.३ से १०.५ घंटे के बीच दर्ज की गई । इस दौरान औसतन अधिकतम व न्यूनतम तापमान क्रमशः **२९.९** डि.से. (सामान्य से ०.६ डि.से. अधिक) तथा **२३.१** डि.से. (सामान्य से ०.९ डि.से. अधिक) दर्ज किया गया है । इस दौरान हवा की औसत गति व वाष्पीकरण दर क्रमशः २.५ कि.मी. प्रति घंटा व ३.२ मि.मी. प्रति दिन थी । प्रातः कालीन औसत आर्द्रता व मृदा का तापमान (५, १० व २० से.मी. पर) क्रमशः **९२%** व २५.६, २६.४ व २६.५ डि॰से॰ दर्ज की गई जबकि यह दोपहर में क्रमशः **७०%** व ३६.०, ३२.६ व ३१.० डि॰से॰ दर्ज की गई । **इस दौरान २३.१ मिमी. वर्षा रिकार्ड की गई**

दिनांक	अधिकतम तापमान (°C)	न्युनतम तापमान (°C)	वर्षा (मि०मी०)	सापेक्ष आर्दता (%)		हवा की गति (कि.मी. प्रति घंटा)	सूर्य प्रकाश अवधि (hr)	वाष्पन (मि०मी०)
				सुबह	दोपहर			
३० अगस्त २०१७	29.6	24.0	2.0	92	76	5.0	2.9	3.6
३१ अगस्त २०१७	29.3	23.6	0.0	90	68	2.3	3.2	3.1
०१ सितम्बर२०१७	31.8	23.2	17.6	98	89	2.2	3.4	2.7
०२ सितम्बर२०१७	26.0	22.2	3.6	95	68	2.0	1.3	2.8
०३ सितम्बर२०१७	29.5	22.5	3.5	90	66	2.4	9.0	3.4
०४ सितम्बर२०१७	30.7	22.4	0.0	90	61	2.3	10.5	3.4
०५ सितम्बर२०१७	32.5	23.5	0.0	86	65	1.3	7.8	3.6
औसत	**29.9**	**23.1**		**92**	**70**	**2.5**	**5.4**	**3.2**
कुल			**26.7**					**22.6**

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(जिला– सरगुजा के लिये)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग, रायपुर द्वारा जारी

०६ से १० सितम्बर २०१७ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार –

1. अगले पांच दिनों में छत्तीसगढ़ के उत्तरीय पहाड़ी क्षेत्रों में आसमान में हल्के बादल देखें जा सकते हैं, **इस दौरान कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होने की सम्भावना हैं, हालाँकि आमतौर पर मौसम शुष्क रह सकता हैं ।**
2. सरगुजा जिले मे अधिकतम तापमान लगभग **३० से ३२°C** रहने की संभावना है एवं न्यूनतम तापमान **२२ से २३°C** के बीच रह सकता है।
3. सुबह हवा में **९०-९५** प्रतिशत तथा दोपहर में **६५-७०** प्रतिशत नमी रहने की संभावना है ।
4. आने वाले दिनो में हवा मुख्यत: दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पूर्व एवं दक्षिण-पश्चिम दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग **२-४** किलो मीटर प्रति घंटा रहने कि संभावना है।

किसानों के लिये समसामयिक सुझाव

- उड़द, कुल्थी एवं रामतिल की बुआई सितम्बर के प्रथम सप्ताह तक समाप्त कर लेवे ।

- दलहन व तिलहन फसलों में खरपतवार नियंत्रण की व्यवस्था करे ।
- जीवाणु जनित झुलसा (बहरीपान) रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो, तो खेत का पानी निकाल कर ३-४ दिन तक खुला रखे तथा २०-२५ किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करे ।
- खेत में झुलसा रोग या शीत blight देखने पर ट्राइसाइक्लोजोल ५०० मी.ली. दवा ५०० लीटर पानी मे मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें ।
- धान फसल की दुसरी निराई-गुड़ाई करे, तथा कन्से फटने व ५०% फुल अवस्था में ५-७ सेमी. पानी खेत में अवश्य रखें । बाली निकलने से पूर्व १२ किलोग्राम नत्रजन प्रति एकड़ रोपाई वाले खेत में डाले ।
- धान की फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राईसाइक्लोजोल (०.६ ग्रा/ली.पानी)/ आइसोप्रोथियोलेन (१ मि.ली./ली.पानी) या टेबुकोनाजोल (१.५ मि.ली./ली.पानी) में से किसी एक फफूँदनाशक दवा का छिड़काव करे । छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करे ।
- धान मे तना छेदक किट कि निगरानी के लिए फिरोमेन ट्रेप २-३ प्रति एकड़ का उपयोग करे एवं प्रकोप पाये जाने पर ८-१० फिरोमेन ट्रेप का उपयोग नियंत्रण के लिये करे ।
- धान की फसल मे बंकी, तना छेदक, गंगई आदि कीटो के नियंत्रण हेतु क्लोरोपाइरिफ़ास दवा का छिड़काव करे ।
- धान की फसल मे कंसा अवस्था मे गंगई किट का प्रकोप देखा जा रहा है इसके नियंत्रण के लिए फ़ोरेट-१० जी दवा, १० किग्रा. या फ़िपरोमिल ०.३ जी दवा का २५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे ।
- तना छेदक एवं कटवा किट दोनों का साथ मे आक्रमण हो तो क्लोरोपायरीफ़ास दवा का १.५ मिली./लीटर पानी के साथ घोल बनाकर स्प्रे करे साथ मे चिपको भी मिलाये ।
- यदि मक्का की फसल २५-३० दिनो या घुटने के उचाई की हो गई, हो तो उपयुक्त नमी रहते निदाई-गुड़ाई कर यूरिया का छिड़काव करे ।
- टमाटर, बैगन,मिर्च आदि फसलों मे पत्ती संकुचन रोग के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोपीड नामक दवा का @६ मिलिलीटर प्रति टंकी (१५ लीटर) का छिड़काव करे ।
- कंद वाली फसलों जैसे (खरीफ़ आलु, अदरक, हल्दी) आदि मे मिट्टी चड़ाने का कार्य करे ।
- अच्छे स्वास्थ्य एवं दूध उत्पादन बनाये रखने एवं बीमारियों से बचाव के लिए पशु बाड़े में मक्खी एवं मच्छरों के नियंत्रण हेतु उपाय करें। पशुओ को मच्छर, मक्खियों से बचाने के लिए पशुशाला मे धुंआ करे ।
- ब्रीडर चूज़ो एवं मुर्गीयों को बीमारी से बचाने के लिए मुर्गीयों के नीचे बिछावन डाले तथा समय समय पर बदलते रहे । साथ ही अंडा उत्पादन हेतु प्रकाश अवधि बड़ाये ।
- पशु बाड़े मे प्रत्येक पशु के लिए सूखे स्थान एवं साफ जल की व्यवस्था करें ।

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र,
अम्बिकापुर, जिला– सरगुजा (छ०ग०)
इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय

संख्या–१०

दिनांक–०५ सितम्बर २०१७

इमेल: aas_ambikapur@yahoo.co.in

टेलीफोन एवं फ़ेक्स– ०७७७४–२३२९८६

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(जिला– **बलरामपुर के लिये**)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग, रायपुर द्वारा जारी **०६ से १० सितम्बर २०१७ तक के** मौसम पूर्वानुमान के अनुसार –

1. अगले पांच दिनों में छत्तीसगढ़ के उत्तरीय पहाड़ी क्षेत्रों में आसमान में हल्के बादल देखें जा सकते हैं, **इस दौरान कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होने की सम्भावना हैं, हालाँकि आमतौर पर मौसम शुष्क रह सकता हैं ।**
2. बलरामपुर जिले मे अधिकतम तापमान लगभग **३० से ३२°C** रहने की संभावना है एवं न्यूनतम तापमान **२२ से २३°C** के बीच रह सकता है।
3. सुबह हवा में **९०-९५** प्रतिशत तथा दोपहर में **६५-७०** प्रतिशत नमी रहने की संभावना है ।
4. आने वाले दिनो में हवा मुख्यत: दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पूर्व एवं दक्षिण-पश्चिम दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग **२-४** किलो मीटर प्रति घंटा रहने कि संभावना है।

किसानों के लिये समसामयिक सुझाव

- उड़द, कुल्थी एवं रामतिल की बुआई सितम्बर के प्रथम सप्ताह तक समाप्त कर लेवे ।
- दलहन व तिलहन फसलों में खरपतवार नियंत्रण की व्यवस्था करे ।
- जीवाणु जनित झुलसा (बहरीपान) रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो, तो खेत का पानी निकाल कर ३-४ दिन तक खुला रखे तथा २०-२५ किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करे ।
- खेत में झुलसा रोग या शीत blight देखने पर ट्राइसाइक्लोजोल ५०० मी.ली. दवा ५०० लीटर पानी मे मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें ।
- धान फसल की दुसरी निराई-गुड़ाई करे, तथा कन्से फटने व ५०% फुल अवस्था में ५-७ सेमी. पानी खेत में अवश्य रखें । बाली निकलने से पूर्व १२ किलोग्राम नत्रजन प्रति एकड़ रोपाई वाले खेत में डाले ।
- धान की फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राईसाइक्लोजोल (०.६ ग्रा/ली.पानी)/ आइसोप्रोथियोलेन (१ मि.ली./ली.पानी) या टेबुकोनाजोल (१.५ मि.ली./ली.पानी) में से किसी एक फफूँदनाशक दवा का छिड़काव करे । छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करे ।
- धान मे तना छेदक किट कि निगरानी के लिए फिरोमेन ट्रेप २-३ प्रति एकड़ का उपयोग करे एवं प्रकोप पाये जाने पर ८-१० फिरोमेन ट्रेप का उपयोग नियंत्रण के लिये करे ।
- धान की फसल मे बंकी, तना छेदक, गंगई आदि कीटो के नियंत्रण हेतु क्लोरोपाइरिफ़ास दवा का छिड़काव करे ।

- धान की फसल मे कंसा अवस्था मे गंगई किट का प्रकोप देखा जा रहा है इसके नियंत्रण के लिए फ़ोरेट-१० जी दवा, १० किग्रा. या फ़िपरोमिल ०.३ जी दवा का २५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे ।
- तना छेदक एवं कटवा किट दोनों का साथ मे आक्रमण हो तो क्लोरोपायरीफ़ास दवा का १.५ मिली./लीटर पानी के साथ घोल बनाकर स्प्रे करे साथ मे चिपको भी मिलाये ।
- यदि मक्का की फसल २५-३० दिनो या घुटने के उचाई की हो गई, हो तो उपयुक्त नमी रहते निदाई-गुड़ाई कर यूरिया का छिड़काव करे ।
- टमाटर, बैगन,मिर्च आदि फसलों मे पत्ती संकुचन रोग के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोपीड नामक दवा का @६ मिलिलीटर प्रति टंकी (१५ लीटर) का छिड़काव करे ।
- कंद वाली फसलों जैसे (खरीफ़ आलु, अदरक, हल्दी) आदि मे मिट्टी चड़ाने का कार्य करे ।
- अच्छे स्वास्थ्य एवं दूध उत्पादन बनाये रखने एवं बीमारियों से बचाव के लिए पशु बाड़े में मक्खी एवं मच्छरों के नियंत्रण हेतु उपाय करें। पशुओ को मच्छर, मक्खियों से बचाने के लिए पशुशाला मे धुंआ करे ।
- ब्रीडर चूज़ो एवं मुर्गीयों को बीमारी से बचाने के लिए मुर्गीयों के नीचे बिछावन डाले तथा समय समय पर बदलते रहे । साथ ही अंडा उत्पादन हेतु प्रकाश अवधि बड़ाये ।
- पशु बाड़े मे प्रत्येक पशु के लिए सूखे स्थान एवं साफ जल की व्यवस्था करें ।

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र,
अम्बिकापुर, जिला– सरगुजा (छ०ग०)
इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय

संख्या–१०

दिनांक–०५ सितम्बर २०१७

इमेल: aas_ambikapur@yahoo.co.in

टेलीफोन एवं फ़ेक्स– ०७७७४–२३२९८६

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(जिला–**जशपुर के लिये**)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग, रायपुर द्वारा जारी **०६ से १० सितम्बर २०१७ तक के** मौसम पूर्वानुमान के अनुसार –

1. अगले पांच दिनों में छत्तीसगढ़ के उत्तरीय पहाड़ी क्षेत्रों में आसमान में हल्के बादल देखें जा सकते हैं, **इस दौरान कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होने की सम्भावना हैं, हालाँकि आमतौर पर मौसम शुष्क रह सकता हैं ।**
2. जशपुर जिले मे अधिकतम तापमान लगभग **३० से ३२°C** रहने की संभावना है एवं न्यूनतम तापमान **२२ से २३°C** के बीच रह सकता है।
3. सुबह हवा में **९०-९५** प्रतिशत तथा दोपहर में **६५-७०** प्रतिशत नमी रहने की संभावना है ।
4. आने वाले दिनो में हवा मुख्यत: दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पूर्व एवं दक्षिण-पश्चिम दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग **२-४** किलो मीटर प्रति घंटा रहने कि संभावना है।

किसानों के लिये समसामयिक सुझाव

- उड़द, कुल्थी एवं रामतिल की बुआई सितम्बर के प्रथम सप्ताह तक समाप्त कर लेवे ।
- दलहन व तिलहन फसलों में खरपतवार नियंत्रण की व्यवस्था करे ।
- जीवाणु जनित झुलसा (बहरीपान) रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो, तो खेत का पानी निकाल कर ३-४ दिन तक खुला रखे तथा २०-२५ किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करे ।
- खेत में झुलसा रोग या शीत blight देखने पर ट्राइसाइक्लोजोल ५०० मी.ली. दवा ५०० लीटर पानी मे मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें ।
- धान फसल की दुसरी निराई-गुड़ाई करे, तथा कन्से फटने व ५०% फुल अवस्था में ५-७ सेमी. पानी खेत में अवश्य रखें । बाली निकलने से पूर्व १२ किलोग्राम नत्रजन प्रति एकड़ रोपाई वाले खेत में डाले ।
- धान की फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राईसाइक्लोजोल (०.६ ग्रा/ली.पानी)/ आइसोप्रोथियोलेन (१ मि.ली./ली.पानी) या टेबुकोनाजोल (१.५ मि.ली./ली.पानी) में से किसी एक फफूँदनाशक दवा का छिड़काव करे । छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करे ।
- धान मे तना छेदक किट कि निगरानी के लिए फिरोमेन ट्रेप २-३ प्रति एकड़ का उपयोग करे एवं प्रकोप पाये जाने पर ८-१० फिरोमेन ट्रेप का उपयोग नियंत्रण के लिये करे ।
- धान की फसल मे बंकी, तना छेदक, गंगई आदि कीटो के नियंत्रण हेतु क्लोरोपाइरिफ़ास दवा का छिड़काव करे ।

- धान की फसल मे कंसा अवस्था मे गंगई किट का प्रकोप देखा जा रहा है इसके नियंत्रण के लिए फ़ोरेट-१० जी दवा, १० किग्रा. या फ़िपरोमिल ०.३ जी दवा का २५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे ।
- तना छेदक एवं कटवा किट दोनों का साथ मे आक्रमण हो तो क्लोरोपायरीफ़ास दवा का १.५ मिली./लीटर पानी के साथ घोल बनाकर स्प्रे करे साथ मे चिपको भी मिलाये ।
- यदि मक्का की फसल २५-३० दिनो या घुटने के उचाई की हो गई, हो तो उपयुक्त नमी रहते निदाई-गुड़ाई कर यूरिया का छिड़काव करे ।
- टमाटर, बैगन,मिर्च आदि फसलों मे पत्ती संकुचन रोग के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोपीड नामक दवा का @६ मिलिलीटर प्रति टंकी (१५ लीटर) का छिड़काव करे ।
- कंद वाली फसलों जैसे (खरीफ़ आलु, अदरक, हल्दी) आदि मे मिट्टी चड़ाने का कार्य करे ।
- अच्छे स्वास्थ्य एवं दूध उत्पादन बनाये रखने एवं बीमारियों से बचाव के लिए पशु बाड़े में मक्खी एवं मच्छरों के नियंत्रण हेतु उपाय करें। पशुओ को मच्छर, मक्खियों से बचाने के लिए पशुशाला मे धुंआ करे ।
- ब्रीडर चूज़ो एवं मुर्गीयों को बीमारी से बचाने के लिए मुर्गीयों के नीचे बिछावन डाले तथा समय समय पर बदलते रहे । साथ ही अंडा उत्पादन हेतु प्रकाश अवधि बड़ाये ।
- पशु बाड़े मे प्रत्येक पशु के लिए सूखे स्थान एवं साफ जल की व्यवस्था करें ।

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र,
अम्बिकापुर, जिला– सरगुजा (छ०ग०)
इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय

संख्या–१०

दिनांक–०५ सितम्बर २०१७

इमेल: aas_ambikapur@yahoo.co.in

टेलीफोन एवं फ़ेक्स– ०७७७४–२३२९८६

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(जिला– **कोरिया के लिये**)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग, रायपुर द्वारा जारी **०६ से १० सितम्बर २०१७ तक के** मौसम पूर्वानुमान के अनुसार –

1. अगले पांच दिनों में छत्तीसगढ़ के उत्तरीय पहाड़ी क्षेत्रों में आसमान में हल्के बादल देखें जा सकते हैं, **इस दौरान कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होने की सम्भावना हैं, हालाँकि आमतौर पर मौसम शुष्क रह सकता हैं ।**
2. कोरिया जिले मे अधिकतम तापमान लगभग **३० से ३२°C** रहने की संभावना है एवं न्यूनतम तापमान **२२ से २३°C** के बीच रह सकता है।
3. सुबह हवा में **९०-९५** प्रतिशत तथा दोपहर में **६५-७०** प्रतिशत नमी रहने की संभावना है ।
4. आने वाले दिनो में हवा मुख्यत: दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पूर्व एवं दक्षिण-पश्चिम दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग **२-४** किलो मीटर प्रति घंटा रहने कि संभावना है।

किसानों के लिये समसामयिक सुझाव

- उड़द, कुल्थी एवं रामतिल की बुआई सितम्बर के प्रथम सप्ताह तक समाप्त कर लेवे ।
- दलहन व तिलहन फसलों में खरपतवार नियंत्रण की व्यवस्था करे ।
- जीवाणु जनित झुलसा (बहरीपान) रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो, तो खेत का पानी निकाल कर ३-४ दिन तक खुला रखे तथा २०-२५ किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करे ।
- खेत में झुलसा रोग या शीत blight देखने पर ट्राइसाइक्लोजोल ५०० मी.ली. दवा ५०० लीटर पानी मे मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें ।
- धान फसल की दुसरी निराई-गुड़ाई करे, तथा कन्से फटने व ५०% फुल अवस्था में ५-७ सेमी. पानी खेत में अवश्य रखें । बाली निकलने से पूर्व १२ किलोग्राम नत्रजन प्रति एकड़ रोपाई वाले खेत में डाले ।
- धान की फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राईसाइक्लोजोल (०.६ ग्रा/ली.पानी)/ आइसोप्रोथियोलेन (१ मि.ली./ली.पानी) या टेबुकोनाजोल (१.५ मि.ली./ली.पानी) में से किसी एक फफूँदनाशक दवा का छिड़काव करे । छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करे ।
- धान मे तना छेदक किट कि निगरानी के लिए फिरोमेन ट्रेप २-३ प्रति एकड़ का उपयोग करे एवं प्रकोप पाये जाने पर ८-१० फिरोमेन ट्रेप का उपयोग नियंत्रण के लिये करे ।
- धान की फसल मे बंकी, तना छेदक, गंगई आदि कीटो के नियंत्रण हेतु क्लोरोपाइरिफ़ास दवा का छिड़काव करे ।

- धान की फसल मे कंसा अवस्था मे गंगई किट का प्रकोप देखा जा रहा है इसके नियंत्रण के लिए फ़ोरेट-१० जी दवा, १० किग्रा. या फ़िपरोमिल ०.३ जी दवा का २५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे ।
- तना छेदक एवं कटवा किट दोनों का साथ मे आक्रमण हो तो क्लोरोपायरीफ़ास दवा का १.५ मिली./लीटर पानी के साथ घोल बनाकर स्प्रे करे साथ मे चिपको भी मिलाये ।
- यदि मक्का की फसल २५-३० दिनो या घुटने के उचाई की हो गई, हो तो उपयुक्त नमी रहते निदाई-गुड़ाई कर यूरिया का छिड़काव करे ।
- टमाटर, बैगन,मिर्च आदि फसलों मे पत्ती संकुचन रोग के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोपीड नामक दवा का @६ मिलिलीटर प्रति टंकी (१५ लीटर) का छिड़काव करे ।
- कंद वाली फसलों जैसे (खरीफ़ आलु, अदरक, हल्दी) आदि मे मिट्टी चड़ाने का कार्य करे ।
- अच्छे स्वास्थ्य एवं दूध उत्पादन बनाये रखने एवं बीमारियों से बचाव के लिए पशु बाड़े में मक्खी एवं मच्छरों के नियंत्रण हेतु उपाय करें। पशुओ को मच्छर, मक्खियों से बचाने के लिए पशुशाला मे धुंआ करे ।
- ब्रीडर चूज़ो एवं मुर्गीयों को बीमारी से बचाने के लिए मुर्गीयों के नीचे बिछावन डाले तथा समय समय पर बदलते रहे । साथ ही अंडा उत्पादन हेतु प्रकाश अवधि बड़ाये ।
- पशु बाड़े मे प्रत्येक पशु के लिए सूखे स्थान एवं साफ जल की व्यवस्था करें ।

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र,
अम्बिकापुर, जिला– सरगुजा (छ०ग०)
इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय

संख्या–१०

दिनांक–०५ सितम्बर २०१७

इमेल: aas_ambikapur@yahoo.co.in

टेलीफोन एवं फ़ेक्स– ०७७७४–२३२९८६

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(जिला– **सूरजपुर के लिये**)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग, रायपुर द्वारा जारी **०६ से १० सितम्बर २०१७ तक के** मौसम पूर्वानुमान के अनुसार –

1. अगले पांच दिनों में छत्तीसगढ़ के उत्तरीय पहाड़ी क्षेत्रों में आसमान में हल्के बादल देखें जा सकते हैं, **इस दौरान कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होने की सम्भावना हैं, हालाँकि आमतौर पर मौसम शुष्क रह सकता हैं ।**
2. सूरजपुर जिले मे अधिकतम तापमान लगभग **३० से ३२°C** रहने की संभावना है एवं न्यूनतम तापमान **२२ से २३°C** के बीच रह सकता है।
3. सुबह हवा में **९०-९५** प्रतिशत तथा दोपहर में **६५-७०** प्रतिशत नमी रहने की संभावना है ।
4. आने वाले दिनो में हवा मुख्यत: दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पूर्व एवं दक्षिण-पश्चिम दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग **२-४** किलो मीटर प्रति घंटा रहने कि संभावना है।

किसानों के लिये समसामयिक सुझाव

- उड़द, कुल्थी एवं रामतिल की बुआई सितम्बर के प्रथम सप्ताह तक समाप्त कर लेवे ।
- दलहन व तिलहन फसलों में खरपतवार नियंत्रण की व्यवस्था करे ।
- जीवाणु जनित झुलसा (बहरीपान) रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो, तो खेत का पानी निकाल कर ३-४ दिन तक खुला रखे तथा २०-२५ किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करे ।
- खेत में झुलसा रोग या शीत blight देखने पर ट्राइसाइक्लोजोल ५०० मी.ली. दवा ५०० लीटर पानी मे मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें ।
- धान फसल की दुसरी निराई-गुड़ाई करे, तथा कन्से फटने व ५०% फुल अवस्था में ५-७ सेमी. पानी खेत में अवश्य रखें । बाली निकलने से पूर्व १२ किलोग्राम नत्रजन प्रति एकड़ रोपाई वाले खेत में डाले ।
- धान की फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राईसाइक्लोजोल (०.६ ग्रा/ली.पानी)/ आइसोप्रोथियोलेन (१ मि.ली./ली.पानी) या टेबुकोनाजोल (१.५ मि.ली./ली.पानी) में से किसी एक फफूँदनाशक दवा का छिड़काव करे । छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करे ।
- धान मे तना छेदक किट कि निगरानी के लिए फिरोमेन ट्रेप २-३ प्रति एकड़ का उपयोग करे एवं प्रकोप पाये जाने पर ८-१० फिरोमेन ट्रेप का उपयोग नियंत्रण के लिये करे ।
- धान की फसल मे बंकी, तना छेदक, गंगई आदि कीटो के नियंत्रण हेतु क्लोरोपाइरिफ़ास दवा का छिड़काव करे ।

- धान की फसल मे कंसा अवस्था मे गंगई किट का प्रकोप देखा जा रहा है इसके नियंत्रण के लिए फ़ोरेट-१० जी दवा, १० किग्रा. या फ़िपरोमिल ०.३ जी दवा का २५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे ।
- तना छेदक एवं कटवा किट दोनों का साथ मे आक्रमण हो तो क्लोरोपायरीफ़ास दवा का १.५ मिली./लीटर पानी के साथ घोल बनाकर स्प्रे करे साथ मे चिपको भी मिलाये ।
- यदि मक्का की फसल २५-३० दिनो या घुटने के उचाई की हो गई, हो तो उपयुक्त नमी रहते निदाई-गुड़ाई कर यूरिया का छिड़काव करे ।
- टमाटर, बैगन,मिर्च आदि फसलों मे पत्ती संकुचन रोग के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोपीड नामक दवा का @६ मिलिलीटर प्रति टंकी (१५ लीटर) का छिड़काव करे ।
- कंद वाली फसलों जैसे (खरीफ़ आलु, अदरक, हल्दी) आदि मे मिट्टी चड़ाने का कार्य करे ।
- अच्छे स्वास्थ्य एवं दूध उत्पादन बनाये रखने एवं बीमारियों से बचाव के लिए पशु बाड़े में मक्खी एवं मच्छरों के नियंत्रण हेतु उपाय करें। पशुओ को मच्छर, मक्खियों से बचाने के लिए पशुशाला मे धुंआ करे ।
- ब्रीडर चूज़ो एवं मुर्गीयों को बीमारी से बचाने के लिए मुर्गीयों के नीचे बिछावन डाले तथा समय समय पर बदलते रहे । साथ ही अंडा उत्पादन हेतु प्रकाश अवधि बड़ाये ।
- पशु बाड़े मे प्रत्येक पशु के लिए सूखे स्थान एवं साफ जल की व्यवस्था करें ।

नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
कृषि मौसम विज्ञान विभाग